रात्रि क्लास 6/7/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

सभी बच्चों को फूल ही कहना पड़े। इस संगमयुग पर फूल ही कहा जाता है। गार्डेन है उसमें वैराइटी है फूलों की। कांटों की भी वैराइटी होती है। फूल कैसे बनते हैं? पवित्र को ही फूल कहा जाता है। अभी फूलों में चाहिए खुशबूएँ। यह चैतन्य फूल है। इनमें खुशबूएँ हैं जबकि याद की यात्रा में हैं और ज्ञान है इतना ही फूल भासेगा। ज्ञान की खुशबूएँ आवेंगी। आत्मा को ही देखा जाता है। कांटें से फूल बन रहे हैं। फिर कांटा बनेंगे अभी याद है। फूल बन जावेंगे फिर कुछ भी याद न पड़ेगा। सिवाय एक बाप के और कोई फूल बना न सके। इसमें वास्तव में कोई संशय न आना चाहिए; परन्तु माया इतनी प्रबल है जो कांटा बना देती है। मनसा भी तूफान आते हैं। कच्चे बच्चे हैं तो झट कांटा बना देती है। तो क्या करना चाहिए। कांटेपने का बदबूएँ न आये इसके लिए क्या उपाय है? उपाय एक ही है। बाप तो एवर फूल है। वह कांटा नही बनता। यह जो दादा है, यह रथ है। दादा फिर सम्बन्ध हो जाता। रथ है। यह भी बड़ा भारी कांटा था। यह भी अभी फूल बन रहा है। तो अभी तुमको फूल कहेंगे। तुम पुरुषोत्तम संगमयुग पर हो। पूछते हैं बाबा क्या पुरूषार्थ करें? बच्चे याद में ही रोला है। अच्छी रीत याद नहीं करते हो। अपन को आत्मा नहीं समझते हो। आत्मा ही सभी कुछ करती है। बाप पराये शरीर में, रावण राज्य में आया है। उनका अपना शरीर होता ही नहीं। उनका नाम सदैव शिव ही है। इनका अपना नाम है। उनका फिराते हैं। बाकी मेरा नाम शिव ही शिव है। बदलता नहीं। बाकी है मनुष्य मात्र। सूक्ष्मवतन का तो समझाया ध्यान में बाबा मम्मा देखते हैं। वह भी यही है। सम्पूर्ण का सा0 हो होता है इसको ऐसा बनना है। तुमको भी ऐसा बनना है। सूक्ष्मवतन में क्या बाबा का रूप देखती हो। वैकुण्ठ में ल0ना0 देखेंगे। ऐसा पवित्र बनना है जैसा सूक्ष्मवतन में देखते हो। तुमको भी ऐसा बनना है। इ(स)में बहुत पुरुषार्थ करना है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही खुशी का पारा चढ़ेगा। जितना2 तुम तमोप्रधान तमो रजो सतो याद की यात्रा से बनेंगे। कल्प2 तुम ऐसे बनते हो। याद दिलाते हैं कल्प पहले भी हमने कहा था अपन को आत्मा समझ देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। अभी भी कहता हूँ कल्प2 भी कहता आऊँगा। अभी पुरुषार्थ करना है ऊँच पद पाने लिए। अच्छी बात के लिए हमेशा मनुष्य पुरुषार्थ करते हैं। जितना याद करते हैं, पढ़ाई पढ़ते हैं। पढ़ाई तो बहुत ही सहज है। अपने 84 जन्मों को जानना है। चक्र को जानना और बाप को याद करना। स्कूल में पढ़ाने वाला भी याद, एमआबजेक्ट भी याद है। याद किया और पढ़ाई पढ़ी बस। और कुछ याद करना न है। यह बातें कोई डिफीकल्ट तो नहीं हैं। बाप बहुत ही सहज समझाते हैं। समझते हो हम सतोप्रधान से गिरे जरूर हैं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। पुरुषोत्तम बनने का। सो भी पुरुषोत्तम उत्तम ते उत्तम पुरुष हैं ल0ना0 वा राधे कृष्ण कहो। सीता–राम को पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे। वह तो 25% कम हो जाते हैं। तुम जरूर पुरुषार्थ करेंगे। हम तो स्वर्ग में जावेंगे। सेमी स्वर्ग में नहीं। जावे तो स्वर्ग में। बाबा के बच्चे हैं तो नई दुनिया में आवें। सतयुग में सुख बहुत है; इसलिए बाप कहते हैं मेहनत करो। यह है वही पुरुषोत्तम संगमयुग। गीता है ही आदी सनातन देवी देवता धर्म की। गीता में ही यह अक्षर है मन्मनाभव..... और कोई कब ऐसे अक्षर कहेंगे नहीं। शास्त्र देख पढ़कर सुनावेंगे। कृष्णभगवानुवाच मामेकम् याद करो। मुझे अपने बाप को याद करो। कृष्ण को बाप थोड़े ही कहेंगे। भक्तिमार्ग चलता भी थोड़ा समय है; परन्तु उनका प्रभाव कितना है। यहाँ समझते भी हैं परन्तु माया बड़ी दुस्तर है। यहाँ से गिरा विकार में गिरा तो खत्म। पतित बन गया। फिर बहुत टाइम लग जाता है। कमाई भी बड़ी भारी है। यहाँ हाफपार्टनर तो कोई होते नहीं। ठगी लगी पड़ी है। यह बाप तो कहते हैं हरेक बच्चों को अपने लिए पूरा पुरुषार्थ करना है। मार्कस अनुसार ही पास होंगे। फिर पास हो न सकेंगे। कल्प2 नापास होते रहेंगे। फिर फुल पास हो स्वर्ग में जाने का उपाय ही नहीं। बाप कितना प्यार से समझाते हैं। अपना जीवन देवता जैसा बनाना है। बल्कि देवता बनना है। इन कृष्ण जैसा बनना है। इसका नाम ही है गीता पाठशाला। यही एक शास्त्र है जिसके नाम पर गीता पाठशाला कहा जाता है। इस्लामी,

बौद्धी आदि पढ़ते थोड़े ही हैं जो पाठशाला कहा जाये। एमआबजेक्ट ही नहीं। यहाँ तो एमआबजेक्ट है। क्राइस्ट नहीं कहेंगे मैं बाप भी हूँ, शिक्षक भी हूँ, गुरु भी हूँ। शिक्षा किसी देंगे। अभी संगमयुग पर सभी को शिक्षा मिलनी है। हिसाब–किताब सभी का चुक्तू कर घर चलना है। ऐसे नहीं त्रेता में आने वाले सतयुग में आवेंगे नहीं। वृद्धि होने लिए ऊपर से आते रहते हैं। बेहद के बाप से बेहद स्वर्ग का वरसा मिलता है। स्वर्ग नई दुनिया, नर्क पुरानी दुनिया को कहा जाता है। ड्रामा फिरता रहता है। बच्चे जानते हैं हमने अनेक बार चक्र लगाया है। लगाते ही रहेंगे। इसलिए मीठे2 बच्चों को पुरुषार्थ कर बहुतों का कल्याण करना है। तुम बच्चे फील करते हो जो बाप को नहीं जानते उनको आरफन, नास्तिक, निधर्ण का कहा जाता है। यह बरोबर है। बाप के आक्युपेशन को तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जानते। कितना बड़ा स्कूल है। बाप डोरापा आकर देते हैं। तुम पूज्य थे फिर पुजारी बने। अपन को चमाट मार विषयसागर में गिर पड़े। इसको कहा जाता है भूल–भुलइया का खेल। मेज़ बनाते हैं ना। जहाँ से जाओ माथा टकड़ेगा दीवाल से। फिर झण्डे वाले को बुलाते हैं रास्ता बताओ। तुम बच्चों को तो विकारों से तीन कोस दूर भागना चाहिए। पढ़ना है तो भी कन्याएँ कन्याओं के साथ पढ़े। तो सेफ्टी है। जयपुर में कुमारियों का स्कूल है। बड़ा खबरदारी से रखते हैं। पहले तो यह प्रैक्टिस डालनी है हम आत्मा हैं। बाप की सन्तान हैं। बाबा हमको पढ़ाते हैं। आत्मा पढ़ती है। शरीर नहीं। हरेक बात आत्मा ही सीखती है। बाढा आत्मा ही बनती है। आत्मा तमोप्रधान बनती है फिर सतोप्रधान भी आत्मा ही बनती है। आत्मा ने शरीर लिया है। आत्मा कहती है हम यह फ्लाना शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। उनका कहा जाता है आत्म–अभिमानी बनना। यह बाप ही सिखलाते हैं। पक्का याद करो। नहीं तो तुम घड़ी2 भूल जाते हो। यहाँ भी याद करना चाहिए। पहले2 अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। आने से ही सावधान कर देनी चाहिए। अपन को आत्मा समझ बाप से सुनो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को यादप्यार गुडनाइट। और नमस्ते।